उत्तर शती का हिंदी साहित्य : समाज और संवेदना

प्राचार्य डॉ. एस.एस. राणे
डॉ. संजय रणखांबे

अथर्व

Scanned with CamScanner

अथर्व पब्लिकेशन्स्

उत्तर शती का हिंदी साहित्य : समाज और संवेदना

© सुरक्षित

ISBN 13 : 978-93-85026-47-8

प्रकाशक

युवराज भटू माळी

अथर्व पब्लिकेशन्स्

धुळे १७, देवीदास कॉलनी, वरखेडी रोड,
धुळे - ४२४००१.

संपर्क ९४०५२०६२३०

जळगाव तळमजला, ओम हॉस्पिटल,
अँग्लो उर्दू हायस्कूलजवळ, ढाके कॉलनी,
जळगाव - ४२५००१.

संपर्क ०२५७-२२३९६६६, ९७६४६९४७९७

ई-मेल atharvapublications@gmail.com

वेबसाईट www.atharvapublications.com

प्रथमावृत्ती

२२ सितंबर २०१५

अक्षरजुळवणी

अथर्व पब्लिकेशन्स्

मूल्य

₹ ४५०/-

- डॉ. अण्णासाहेब जी. डी. बेंडाले महिला महाविद्यालय, जलगाँव, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली के हिंदी विभाग तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में दि. २२ तथा २३ सितंबर २०१५ द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय हिंदी परिषद शोधालेख पुस्तक के रूप में प्रकाशित
- इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए प्रकाशक से लिखित अनुमती लेना अनिवार्य है।

Scanned with CamScanner

२५. 'मोहनदास' कहानी में व्यक्त बेरोजगार युवकों की संवेदना १२६
– प्रा. रविंद्र आर. खरे

२६. उत्तर शती का हिंदी साहित्य : समाज और संवेदना १३१
– प्रा. आर. डी. गवारे

उत्तर शती के हिंदी उपन्यास

२७. 'झीनी-झीनी बीनी चदरिया' में अभिव्यक्त समाज और संवेदना . १३६
– पठान हसन

२८. 'धार' उपन्यास में आदिवासी : समाज और संवेदना १४२
– करम हुसैन

२९. अंतिम दशक के हिन्दी उपन्यासों में अभिव्यक्त समाज और संवेदना १४७
– राजेश कुमार

३०. शशिप्रभा शास्त्री के उपन्यासों में बदलते हुए मानवीय संबंधों का चित्रण १५०
– प्रा. देवेंद्र नारायण बोंडे

३१. अनामिका के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक संवेदना १५५
– प्रा. कृष्णा प्रल्हाद पाटील

३२. 'दौड़' उपन्यास में अभिव्यक्त सामाजिक संवेदना १६१
– प्रा. प्रमोद मनोहर चौधरी

३३. उत्तर शती का हिंदी उपन्यास 'अस्तित्त्व' में समाज और नारी संवेदना १६४
– प्रा. विजय सुखदेव वाकेकर

३४. उत्तर शती के हिंदी उपन्यास : समाज और संवेदना १७०
– प्रा. नारायण दाजीबा अटकोरे

३५. परिवर्तित समाज की व्यथा- दशा : 'आग –पानी' १७४
– डॉ. रूपाली दिलीप चौधरी

३६. उत्तर शती का हिंदी साहित्य : समाज और संवेदना नासिरा शर्मा १७८
– प्रा. डॉ. पी. आर. गवली

३७. हिंदी उपन्यास 'आवाँ' में व्यक्त समाज और संवेदना १८३
– डॉ. पूनम त्रिवेदी

Scanned with CamScanner

उत्तर शती का हिंदी साहित्य : समाज और संवेदना

संजीव एवं भास्कर चंदनशिव की कहानियों में आर्थिक समस्याओं का चित्रण

प्रा. आर. डी. गवारे

प्रस्तावना: संजीव हिंदी साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर है । उनकी कहानियों में उत्तर भारत के आम जनजीवन का चित्रण देखने को मिलता है । उन्होंने बारह कहानी संग्रहों का सृजन किया है । उनकी कहानियों में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, एवं धार्मिक समस्याओं का चित्रण किया गया है । भास्कर चंदनशिव मराठी कहानी के प्रमुख हस्ताक्षर है । उन्होंने पाँच कहानी संग्रहों का सृजन किया है । उन्होंने अपनी कहानियों में महाराष्ट्र के किसानों, नारियों, एवं आम आदमी के जीवन में आनेवाली समस्याओं को प्रस्तुत किया है । उनकी कहानियों में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, एवं धार्मिक समस्याओं का चित्रण किया गया हैं । यहाँ दोनों कहानीकारों की कहानियों में चित्रित आर्थिक समस्याओं का अध्ययन किया है । अर्थ के अभाव में जूझते आम आदमी की व्यथा का चित्रण कर इन लेखकों ने अपने साहित्यिक दायित्व को निभाया है । दोनों लेखकों का परिवेश भले ही अलग-अलग हो लेकिन दोनों और की समस्याओं एवं परिस्थितियों में अधिक साम्य दिखाई देता है । दोनों कहानीकारों के कहानी संग्रहों का प्रकाशन १९८० के बाद हुआ है । दोनों ने आज तक की स्थिति को प्रस्तुत किया है ।

अर्थ के अभाव की समस्या: अर्थ का अभाव बहुत-सी समस्याओं को जन्म देता है । रात-दिन मेहनत मजदूरी करके भी खाने के लिये पेटभर रोटी मिल पाना दुभर हो जाता है । संजीव की 'भूखे रीछ' कहानी में रामलाल कारखाने में काम करता है लेकिन जो मजदूरी उसे मिलती है उससे घर चलाना मुश्किल हो जाता है । वह अपने बच्चों की साधारण- सी जरुरते भी पूरी नहीं कर सकता वह सोचता है, कैसा पापी पिता है, न बेटी को कुछ दे पाता है न बेटे को ! एक छटाक दुध भी मयस्सर नहीं होता।[१] रामलाल अर्थ के अभाव के कारण अपने परिवार को सुख नहीं दे पाता । 'तिरबेनी का तडबन्ना' कहानी में तिरबेनी की पत्नी देवी -देवताओं के सामने पेट भरने का हमेंशा के लिए जुगाड हो जाए इसलिए प्रार्थना करती है । संजीव की 'आप यहाँ है', 'वांछित-अवांछित' आदि कहानियों में अर्थ के अभाव की समस्या सामने आई है ।

Scanned with CamScanner

भास्कर चंदनशिव की 'आधार' कहानी में आबा अर्थ के अभाव में जीवन-यापन कर रहा है । वह अपनी शादी- शुदा बेटी के लिए एक साडी भी खरीद नहीं सकता । 'वाळवी' कहानी का 'नाना' रात-दिन काम करता है लेकिन गाँव के आबा का ऋण चुका नहीं पाता । वह शादी के लिए आबा से ऋण लेता है । 'तडा' कहानी का तात्या अपने बेटे सुधाकर के पास शहर इसलिए जाता है कि, बेटा आर्थिक मदद करेगा लेकिन उसे खाली हाथ लोटना पडता है । 'कळा' कहानी में अकाल की वजह से अर्थ के अभाव में गाँव की औरतों को ठेकेदार के यहाँ काम करना पडता है । 'काळइळा' कहानी में कठिन आर्थिक परिस्थिति में पति अपनी पत्नी के लिए उधार में दो साडीयाँ ले आता है तब पत्नी मन में कहती है, कहते है उधार मिला । कहीं जहर भी उधार मिला तो लेना चाहिए क्या ?[२] इससे स्पष्ट होता है कि, आर्थिक अभाव के कारण कपडे की आवश्यकता भी पूर्ण नहीं कर सकता । चंदनशिव की 'तोडनी', 'तिढा', 'हिसाब' आदि कहानियों में अर्थ के अभाव की समस्या का चित्रण हुआ है।

संजीव एवं भास्कर चंदनशिव की कहानियों में अर्थ के अभाव में जीवन बिताते लोग दिखाई देते है । संजीव की 'भूखे रीछ' कहानी का रामलाल, 'तिरबेनी का तडबन्ना' कहानी का तिरबेनी आदि लोग अर्थ के अभाव में जूझ रहे है । चंदनशिव की 'आधार' कहानी का आबा, 'वाळवी' का नाना, 'तडा' का तात्या आदि लोग रात-दिन मेहनत करके भी पेट नहीं भर पाते । संजीव के कहानी पात्र कारखानों में मजदूरी करते है तो चंदनशिव के पात्र खेती एवं मजदूरी करते है ।

गरीबी की समस्या : भूख एवं गरीबी की समस्या सबसे गंभीर समस्या है । संजीव की 'मरोड' कहानी में मास्टर दीनानाथजी का परिवार गरीबी से जूझता है । मास्टर सेठ के बच्चों की ध्यान नहीं दे पाते । लेखक इस गरीबी की स्थिति का वर्णन करते हुए लिखते है, बाद में तो हालत इतनी बदतर हो गई थी कि मेले- ठेले, बाजार हाट तक में अपने बच्चों को ले जाने से कन्नी काटने लगे ।[३] उन्हे हमेंशा गरीबी की यातना कचोटती रहती है । चाकरी कहानी में कथानायक और उसके माता-पिता को गाँव छोडकर शहर में जाना पडता है । शहर में कथानायक के माँ-बाप को साधारण काम करने पडते है । कथानायक कहता है, बाबूजी को किसी होटल में टेबुल पर कपडा मारने का और माँ को होटल में जूठे बर्तन मलने का काम मिल गया ।...रात को हम पास के खाली गैरजों में सोया करते,जहाँ कभी-कभी लावारिस कुत्तों और भिखारियों से संधि करनी पडती ।[४] कथानायक के बदन पर दूसरे के घरों से माँगकर लाये गये कपडे होते थे। 'महामारी' कहानी में आदिवासी लोगों के जीवन में गरीबी ने घर कर रखा है।

Scanned with CamScanner

गरीबी की समस्या का चित्रण 'आप यहाँ है', 'तीस साल का सफरनामा' आदि कहानियों में देखने को मिलता है ।

चंदनशिव की 'पोटांधळं' कहानी में चंपा को उसका बाप जान-बुझकर देसाई के यहाँ काम पर भेजकर उसकी इज्जत को खतरे में डालता है । दो-सौ रुपये के लालच में उसकी शादी करवाता है । 'मूकी हालकी' कहानी में एक लोक कलाकार को भूख की समस्या को सहन पडता है । 'उमाळं' कहानी में गरीबी से जूझते हुए माता-पिता अपने बेटे को पढाने के लिए बैल बेचते है । 'पोटचं पोटाला' कहानी का दगडूबा गरीबी के कारण अपनी बेटी को बेच देता है । 'नवी हत्यारं' कहानी के तात्या सानप के परिवार को गरीबी के कारण यातनाओं को सहन पडता है । 'आताडी' कहानी में अकाल के कारण भूख-भूख करते हुए लोग तडपते है । लेखक लिखते है, पेट की आग में घर-घर खाली हो रहे थे ।[५] इससे स्पष्ट है की, भूख एवं गरीबी की भीषण दाहकता में जीवन जीना काफी यातनामय होता है । चंदनशिव की कहानियों में अत्यंत दयनीय स्थिति में जीवन जीते लोग दिखाई देते है ।

संजीव एवं भास्कर चंदनशिव की कहानियों में गरीबी से जूझते लोग दिखाई देते है । संजीव की 'मरोड' कहानी के मास्टरजी का परिवार, 'चाकरी' कहानी के कथानायक का परिवार, चंदनशिव की 'पोटांधळं' कहानी के चंपा का बाप, 'मूकी हालकी' कहानी के लोक कलाकार का परिवार, 'उमाळं' कहानी का परिवार, 'पोटचं पोटाला' कहानी का दगडूबा, 'नवी हत्यारं' कहानी के तात्या सानप का परिवार आदि को गरीबी से जूझ रहा है ।

बेरोजगारी की समस्या : संजीव की 'चूनौती' कहानी में कारखाना मालिक जपानी मशीनों को कारखाने में बिठाता है । तब मजदूर कहता है, साहेब हमें दूध की मक्खी की तरह फेंकिए मत । हम, हमारे बाल - बच्चा भूखों मर जायेंगे ।[६] मजदूरों को डर है कि काम से निकाल दिया जायेगा तो बेरोजगारी की समस्या निर्माण हो जाएगी । 'किस्सा एक बीमार कंपनी की एजन्सी का' इस कहानी में बेरोजगारी से पीडित युवक एक बीमा कंपनी में एजंट का काम करता है । दर-दर ठोकर खाने पर भी उसे बीमा ग्राहक नहीं मिलते । 'फूटबॉल' कहानी में बूढा मजदूर अपने बेटे को कारखाने में भर्ती करने के लिए पंद्रह हजार की घूस देने की बात सुनकर परेशान हो उठता है । 'चाकरी' कहानी का 'मैं' बेकारी से जूझता हुआ नौकरी के लिए संघर्ष करता है ।

चंदनशिव की 'हिसाब' कहानी में 'तात्या सानप' का बेटा महिपती एक शिक्षित युवक है । फिर भी उसे बेरोजगार रहना पडता है । उसकी स्थिति के बारे में लेखक कहते है, उसने रात -दिन एक करके पढाई की बी.कॉम. की डिग्री

Scanned with CamScanner

प्रथम श्रेणी में पास की और छः हजार रुपये भरकर प्राईवेट कॉलेज में बी. ए. भी पूरा किया । सभी नेताओं एवं अधिकारियों से मिन्नते की । हर रोज अखबार में विज्ञापन देखता है । अर्जी करते-करते परेशान हो जाता । उसके लिए बाप के जहाँ-नहीं वहाँ सिर झुकाया ।[७] कभी-कभी बाप के द्वारा भी उसे अपमानित होना पडता है ।

संजीव एवं भास्कर चंदनशिव की कहानियों में बेरोजगारी की समस्या का यथार्थ चित्रण हुआ है । यह चित्रण आज भी हमारी व्यवस्था पर लागू होता है । दोनों कहानीकारों ने पहचानबाजी की व्यवस्था में शिक्षित बेरोजगारी की दुर्दशा को प्रस्तुत किया है । संजीव की 'चूनौती' कहानी में यंत्रो के आने से मजदूरों को बेरोजगार होने का डर है ।

आर्थिक शोषण की समस्या : संजीव की 'सागर-सीमांत' कहानी में ठेकेदार चटर्जी मछलियों का ठेका लेता है । मजदूर जान जोखिम में डालकर मछलियाँ पकडते है लेकिन उन्हें काम के पूरे पैसे नहीं मिलते । 'भूखे रीछ' में रामलाल एक मजदूर है वह आठ घंटे कारखाने में काम करता है लेकिन फिर भी अपनी परिवार की जरुरतें पूरी नहीं कर पाता । 'प्रेतमुक्ति' कहानी के जगेसर का हर कोई ठेकेदार आर्थिक शोषण करता है । 'आप यहाँ है' कहानी में आदिवासी स्त्री हिदिया मि. वर्मा के यहाँ काम करती है । उसका पति काम करने बाहर गया है । हिदिया अपने पती के हो रहे शोषण के बारे में कहती है , औ, उधार का ठेकेदार है न बहोत बदमाश । कोई इटा चिमनी में खटाता, कोई खेती में । गदहा के जैसा खटाता । पैसा बचेगा तो जरूर भेजेगा ।[८] इससे स्पष्ट होता है कि, उच्च वर्ग के पूँजीपति, ठेकेदार लोग गरीब वर्ग का शोषण करते है ।

चंदनशिव की कहानियों में किसानों कि दयनीय स्थिति के लिए आर्थिक शोषण करनेवाले लोग जिम्मेदार है । किसानों, मजदूरों को श्रम का उचित मूल्य नहीं मिल पाता । किसानों की हुई दुरावस्था का चित्रण 'अंगारमाती' कहानीसंग्रह की 'सडनी', 'इस्कुटा', 'मेखमारो', 'खोडा', 'कोळस', 'लाल चिखल' आदि कहानियों में हुआ है । 'हिशोब' कहानी में तात्या सानप को हर साल अपने खेत में हुई उपज को मारवाडी मालिक के यहाँ पहुचाना पडता है । लेखक कहते है , न जाने किस युग का कर्जा है , ब्याज का ब्याज बढता जाता ।[९] 'सडनी' कहानी में प्याज का अधिक उत्पादन होने की वजह से मार्केट कमिटी के अधिकारी, दलाल, स्वार्थी नेता आदि लोग चारों तरफ से शोषण करते है । 'लाल चिखल' कहानी में आबा एक गरीब किसान है । वह टमाटर का उत्पाद लेता है जब वह टमाटर बेचने बाजार जाता है उसे टमाटर का सही मूल्य नही मिल पाता । इसलिए वह क्रोधित होकर टमाटरों के कीचड पर पागलों- सा

Scanned with CamScanner

नाचने लगता है । जकात के नाम पर म्युन्सीपाल्टी वाले उसे लुटते है ।

संजीव और भास्कर चंदनशिव के कहानियों में विविध घटकों द्वारा होनेवाले आर्थिक शोषण को चित्रित किया है । संजीव की कहानियों में मजदूरों का शोषण है तो भास्कर चंदनशिव की कहानियों में किसानों का शोषण चित्रित हुआ है । दोनों और आम आदमी यातनामय जीवन जी रहा है ।

निष्कर्ष : निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि संजीव एवं भास्कर चंदनशिव क्रमश: हिंदी एवं मराठी के महत्वपूर्ण कहानीकार है । दोनों लेखकों ने अपने परिवेश को परखकर समस्याओं का सूक्ष्म अध्ययन किया है । दोनों लेखकों ने अर्थ के अभाव में दिन काटते लोगों के जीवन का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है । दोनों प्रदेशों के लोग गरीबी, बेरोजगारी एवं आर्थिक शोषण की समस्या से ग्रस्त है । संजीव की कहानियों में ग्राम एवं नगरीय जीवन का चित्रण अधिक हुआ है तो चंदनशिव की कहानियों में ग्राम जीवन को प्राथमिकता दी गई है । दोनों प्रदेशों के लोग रात-दिन मेहनत कर रहे है फिर भी उन्हें पेट भर खाना नहीं मिल पाता । एक और हम आर्थिक विकास कर रहे है तो दूसरी और लो भूख से मर रहे है । अमीर व्यक्ति अमीर बनता जा रहा है तो गरीब और अधिक गरीब बनता जा रहा है । देश में किसान आत्महत्याएँ कर रहे है । देश का पालन-पोषण करनेवाला ही आज संकट में है ऐसी स्थिति में हमारी व्यवस्था को सचेत एवं जागृत होने की आवश्यकता है, नहीं तो एक दिन देश में गरीबी, बेरोजगारी के कारण भयंकर विस्फोट होना निश्चित है । दोनों लेखकों ने इसका संकेत बहुत पहले करा दिया है ।

संदर्भ ग्रंथ :

१. संजीव की कथा -यात्रा : पहला पडाव - 'भूखे रीछ', संजीव - पृ. १०३
२. बिरडं - 'काळइळा', भास्कर चंदनशिव - पृ. ९०
३. संजीव की कथा -यात्रा : पहला पडाव - 'मरोड', संजीव - पृ. ४१
४. संजीव की कथा -यात्रा : पहला पडाव - 'चाकरी', संजीव - पृ. ७३
५. अंगारमाती - 'आताडी', भास्कर चंदनशिव - पृ. १४७
६. संजीव की कथा -यात्रा : पहला पडाव - 'चुनौती', संजीव - पृ. ४३८
७. अंगारमाती - 'हिसाब', भास्कर चंदनशिव - पृ. ०९
८. संजीव की कथा -यात्रा : पहला पडाव - 'आप यहाँ है', संजीव - पृ. १५६
९. अंगारमाती - 'हिसाब', भास्कर चंदनशिव - पृ. ०८

Scanned with CamScanner

2015-16

उत्तर शती का हिंदी साहित्य संपूर्णतः भूमंडलीकरण के परिणाम स्वरूप अपनी नयी स्थितियों की देन है। २० वीं शती के अंतिम दशक में आयी भूमंडलीकरण की लहर ने संपूर्ण भारतीय समाज को झकझोर दिया। साहित्य भी इससे अछूता न रहा। सदी के अंतिम दशक का भारतीय साहित्य अधिकांशतः भूमंडलीकरण के विरोध का साहित्य है। परंतु कई विरोधों के बावजूद आज सच्चाई यही है कि भूमंडलीकरण इस देश में अपनी जडें पूरी तरह से जमा चुका है।

अगर हम केवल हिंदी साहित्य के संदर्भ में सोचें तो दिखाई देगा कि प्रारंभ में भूमंडलीकरण के विरोध में डटकर खडा होनेवाला यह साहित्य आज उसके परिणामों को अंकित कर रहा है। उत्तर शती के साहित्य की यह एक विशेषता बन गयी है। १९८०-९० तक साहित्य आंदोलनों से जुडा हुआ था तथा साहित्य में भी विभिन्न आंदोलन चल रहे थे। साहित्य तथा साहित्यकार समाज के प्रति प्रतिबद्ध था। परंतु १९९० के बाद अर्थात् भूमंडलीकरण के बाद साहित्य में लोकप्रिय साहित्य का दौर प्रारंभ हुआ। साहित्य से आंदोलन पृथक किया गया। सामाजिक प्रतिबद्धता को भूलकर साहित्यकार लोकप्रियता के चंगुल में फँस गया। भूमंडलीकरण की चकाचौंध भरी दुनिया का असर साहित्य तथा साहित्यकार पर भी हुआ।

•••

अथर्व पब्लिकेशन्स्
ऑनलाईन पुस्तक खरेदीकरिता...
www.atharvapublications.com

Scanned with CamScanner